समूह सत्र नं0– 5

संसाधनों तक पहुंच और नियत्रंण

उद्देश्य –समूह सत्र के अंत तक प्रतिभागी समझ पाएंगे कि –

- किस तरह महिला व पुरुषों की बीच संसाधनों का असमान बंटवारा किया जाता है।
- संसाधनों पर किसका नियंत्रण ज्यादा होता है और यह किस तरह महिला के स्थिति को चुनौती देती है।

पद्धति : सामूहिक अभ्यास व चर्चा

समय : 1 घंटा

सामग्री : चार्ट पेपर, स्केच, संसाधान आधारित चित्र – मोबाईल, लैपटाप, ट्रैक्टर, खाना बनाने के बर्तन, मोटरसाईकिल, बच्चा/बच्ची, घर, आभूषण/गहनें, झाड़ू, पेन–पुस्तक, कालेज/विश्वविद्यालय, ट्रेन, कैमरा, खेल का मैदान, टी0वी0, साईकिल, खेत, बाजार, पार्क, खिलौनें, मेज–कुर्सी, जानवर आदि।

गतिविधियां :

1. सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों को गोल घेरे में बैठा दें तथा आज की जाने वाली चर्चा के विषय को स्पष्ट कर दें।

2. इसके बाद दो चार्टो को जिसमें एक में महिला/लड़की तथा दूसरे में पुरूष/लड़के का चित्र बना हो, प्रतिभागियों के बीच में रख दें।

3. प्रतिभागियों को स्पष्ट कर दें कि सभी प्रतिभागियों को बारी–बारी से आना है तथा एक सामान/चित्र को उठाकर महिला/लड़की या पुरूष/लड़के के चार्ट के सामने रखना है/चिपकाना है।

4. निम्न संभावित सामानों या अखबारों से चित्रों को पहले से एकत्र कर लें तथा प्रतिभागियों के सामने एक किनारे में रख दें।
   मोबाईल, लैपटाप, ट्रैक्टर, खाना बनाने के बर्तन, मोटरसाईकिल, बच्चा/बच्ची, घर, आभूषण/गहनें, झाड़ू, पुस्तक, कालेज/विश्वविद्यालय, ट्रेन, कैमरा, खेल का मैदान, टी0वी0, साईकिल, खेत, बाजार, पार्क, खिलौनें, जानवर आदि।

5. इसके बाद सभी प्रतिभागियों को बारी–बारी से आने के लिए कहें।

6. जब सभी प्रतिभागी सामानों/चित्रों को चार्ट पर रख/चिपका चुकें हो तब इसके बाद, प्रतिभागियों को दोनों चित्रों का अवलोकन करने के लिए कहें तथा **निम्न सवालों को आधार पर चर्चा को आगे बढ़ायें –**
   - किस तरह के संसाधनों तक महिलाओं/लड़कियों की पहुंच है?
   - किस तरह के संसाधनों तक पुरूष/लड़का की पहुंच है?
   - किसका पहुंच संसाधनों तक ज्यादा है? महिला या पुरूष?
   - क्या जिन संसाधनों तक महिलाओं/लड़कियों की पहुंच है उनके बारें में वे खुद से कोई निर्णय ले सकती हैं?

- क्या जिन संसाधनों तक पुरूषों/लड़कों की पहुंच है उनके बारें में वे खुद से कोई निर्णय ले सकते हैं?
- संसाधनों तक महिला/लड़की की पहुंच व नियत्रंण कम होने से उसके जीवन में क्या असर पड़ता है?
- संसाधनों तक पुरूष/लड़कों की पहुंच व नियत्रंण ज्यादा होने से उसके जीवन में क्या असर पड़ता है?

सार– जेण्डर भेदभाव के कारण बहुत सी महिलाएं संसाधनों की पहुंच के बाहर रह जाती हैं। संसाधनों की अनुपलब्धता व पहुंच न होने के कारण महिलाओं को शिक्षा, विकास, स्वास्थ्य आदि के मौकों से वंचित रहना पड़ता है। अगर संसाधनों तक पहुंच होती भी है तो यह जरूरी नहीं कि उन संसाधनों पर नियंत्रण भी हो। जैसा कि चर्चा के दौरान निकलकर आया कि ज्यादातर संसाधनों पर महिलाओं का नियंत्रण नही होता है, यहां तक कि उनके अपने गहनों पर भी घर के पुरुषों का ही नियंत्रण होता है।

संसाधनों पर नियंत्रण आत्मविश्वास पैदा करता है जिससे निर्णय पर नियंत्रण होता है। ज्यादातर महिलाओं का तो अपने शरीर पर भी नियंत्रण नहीं होता। वे कब, कहां, किससे शादी करना चाहें ये तय नहीं कर सकती हैं। महिला जो कुछ बचत करती हैं या कमाती है वह भी परिवार पर ही खर्च करती है, या अपने पति/पुरुषों को दे देती है। महिलाएं भी यह मानने लगती हैं कि उनके घर के पुरुष उनसे अच्छा निर्णय ले सकते हैं। यह एक जेण्डर आधारित भेदभाव है या महिलाओं के साथ सामाजिक भेदभाव है जो समाज द्वारा बनाया गया है।

अगर हम महिला–पुरूष समानता पर विश्वास करते हैं तो हमें महिलाओं की संसाधनों तक पहुंच और नियत्रंण को बढ़ाना होगा ताकि उनका आत्मविश्वास बढ़ सकें और वे भी बराबरी के साथ आगे बढ़ सकें।

नोटः सत्र समापन के पूर्व समूह सदस्यों की प्रतिक्रियाएं जरूर लें तथा उनके द्वारा व्यक्त किये जाने वाले विचारों को नोट कर लें तथा जरूरत के आधार पर ही स्पष्टीकरण दें।

इसके बाद उपस्थित सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए सत्र का समापन करें।